International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal l -Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

दक्षिणी मध्य गंगा घाटी के नदियों का अध्ययन

डॉ. केशरी नन्दन मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय पी.जी. कालेज, नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्य पठार से घिरी मध्य गंगा घाटी के पूरब और पश्चिम कोई प्राकृतिक सीमा–रेखा नहीं है। बिहार और बंगाल प्रान्त की सीमा–रेखा इसके पश्चिमी सीमा का निर्धारण करती है तथा इलाहाबाद से फैजाबाद जाने वाली रेलवे लाइन की इसकी पश्चिमी सीमा–रेखा माना गया है। उत्तरी बंगाल में नदी समूह, संचार और जीवन का स्वरूप दक्षिण बंगाल से इतना भिन्न है कि स्पेट के अनुसार बिहार के पूर्वी जिले पूर्णिया और समीपस्थ बंगाल के क्षेत्र को अलग सुपरिभाषित भौगोलिक इकाई माना जा सकता है।

गंगा घाटी में कई स्थलों पर गंगा के पुराने कछार के अनुभागों में चार जमाव मिलते हैं । सबसे नीचे का जमाव कंकरीली पीली मिट्टी का है। इसके ऊपर काली मिट्टी का जमाव है। तीसरा जमाव पोतनी मिट्टी का है, और सबसे ऊपर बलुई मिट्टी का लगभग 2 मीटर मोटा जमाव है।

गंगा के दक्षिण में स्थित संकरा मैदानी भाग, उत्तरी मैदानी भाग की अपेक्षा समुद्रतल से कुछ अधिक ऊँचा है और यहाँ की प्रायद्वीपीय पठार से नदियों द्वारा बिछाए गए कांप मिट्टी के अवसादों का जमाव काफी गहराई तक आच्छादित है। वस्तुतः गंगा और उसकी सहायक नदियों द्वारा गंगा के मैदान का निर्माण हुआ है। सरयू पार मैदान में चूनायुक्त कांप मिट्टी पाई जाती है, जिसे भूर भी कहते हैं।

इस क्षेत्र का ऊपरी तल से नदियों (गंगा, घाघरा, छोटी सरयू) की ओर थोड़ा ढाल दिखाई पड़ता है। गहरे एवं विस्तृत आकार की स्थानीय धसकनें इस प्रदेश में झीलें और अनूपों को उत्पन्न करती हैं। इस कड़ी में उल्लेखनीय है कि भूमि की स्थलीय एकरूपता केवल गोमती और उसकी सहायिकाओं के कछारों द्वारा ही भंग होती है और क्षेत्र में अनेक छोटे–छोटे छिछले गर्त हैं, जिनमें वर्षा का जल जमा होता है। भौगोलिक परिवेश की दृष्टि से पुरास्थलों की स्थिति निचली 'बांगर भूमि' में ही है।

मगध घाटी

सोन के पूरब का दक्षिणी मध्य गंगा घाटी, मगध पठार के नाम से विख्यात है इस क्षेत्र में भी कुछ नीची पहाड़ियाँ विद्यमान हैं, जो राजगिरि तथा खड़गपुर तक पाई जाती हैं। इस घाटी में अनेक धनुषाकार झीलें भी दृष्टिगोचर होती हैं

अध्ययन क्षेत्र (मध्य गंगा घाटी) में दो महत्त्वपूर्ण नदियाँ गंगा और घाघरा की अपनी सहायक नदियों (छोटी सरयू, मंगई आदि) के साथ क्षेत्र में प्रवाह–प्रणाली को विकसित करती हैं।

हिमालय पर्वत से निकलने वाली नदियों द्वारा संचित यह घाटी ''हिमालय पर्वत का उपहार'' कहा जाता है । हिमालय से निकलने वाली अधिकांश नदियाँ वर्ष पर्यन्त जल पूरित एवं सदावाहिनी हैं क्योंकि इनमें वर्षा के अतिरिक्त ग्रीष्म ऋतु में हिमालय के बर्फ पिघलने से ही जल प्राप्त होता रहता है

घाघरा अपवाह तंत्र

घाघरा कुमायूँ और नेपाल की पहाड़ियों से निकलकर चौका, कोरियाला, बहराइच, गोण्डा, बाराबंकी, फैजाबाद जिला की सीमा बनाती हुई अवध की प्राचीन राजधानी अयोध्या से होती हुई आजमगढ़, गोरखपुर जनपद की सीमा निर्धारित करती है और

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

राप्ती, मनोरमा एवं छोटी गंडक नदियों का जल ग्रहण करती हुई बलिया जनपद की उत्तरी सीमा से गुजरती/निकलती हुई बिहार प्रान्त में छपरा जिले के निकट गंगा नदी से मिलती है

घाघरा की सहायक नदियाँ

अध्ययन क्षेत्र (मध्य गंगा घाटी) में घाघरा की कोई महत्त्वपूर्ण सहायक नदी नही है। कुछ निम्नलिखित छोटी नदियाँ इससे मिलती हैं जो इस प्रकार हैं :

थिरूआ – यह नदी फैजाबाद तहसील के अमसिन परगना के समन्था गाँव के झील से निकलती है। और टाण्डा के लगभग 1.5 किलोमीटर पूरब घाघरा नदी में मिलती है।

सिकिया – यह नदी टाण्डा तहसील से विडहड़ परगना के रामडीह सराय जिसे गडहा भी कहते है, से निकलती है। यहाँ से बहती हुई यह नदी आजमगढ़ जिले में प्रवेश कर जाती है, लेकिन थोड़ी दूर बहने के बाद यह पुनः फैजाबाद जिले की सीमा में प्रवेश करती है और उत्तर की तरफ मुड़ने के बाद यह कमहरिया घाट के पास घाघरा नदी से मिल जाती है।

टोड़ी नदी – यह टाण्डा वसरडाही के मध्य स्थित डेवहट झील से निकलती है। और दक्षिण पूर्व दिशा में किछौछा होती हुई विहहड़ और सुरहुरपुर परगना की सीमा से होकर आजमगढ़ जिले में प्रवेश करती है।

मझुई – यह टोंस नदी की प्रमुख सहायक नदी है जो इलाहाबाद–फैजाबाद सड़क मार्ग के पश्चिम में कितावन के पास एक झील से निकलती है

गंगा – गंगा नदी सदियों से भारत के जन मानस को सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और आर्थिक परिवेश के केन्द्र बिन्दु रही है । अपने अपवाह क्षेत्र में महान संस्कृतियों का

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

उतार–चढ़ाव और मानव की उन्नति–अवनति गाथा समेटे हुए इस पवित्र सरिता की महत्ता का वर्णन आदिकाल से न केवल पौराणिक और आध्यात्मिक साहित्य में मिलता है

गंगा नदी प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति की एकता तथा पवित्रता की प्रतीक मानी गयी है। लोक कथाओं और परम्पराओं में इसे शक्ति देने वाली 'गंगा माता' कहा गया है। गंगा के प्रति हिमालय से कन्याकुमारी और गुजरात तक बना भारतीयो का आकर्षण रहा है।

मंदाकिनी नदी प्रसिद्ध केदारनाथ धाम के निकट ग्लेशियर से उत्पन्न होती है। भागीरथी और अलकनंदा नदियाँ देवप्रयाग में आपस में मिलकर गंगा नाम धारण करती हैं। जल निस्तारण की दृष्टि से गंगा नदी विन्ध्य के उत्तरवर्ती और शिवालिक की पहाड़ियों के दक्षिणवर्ती नदियों में से सबसे महत्त्वपूर्ण एवं विस्तृत है । गंगा नदी की लम्बाई 1557 मील (2506 किलोमीटर) है । इसे संसार की 29वीं लम्बी नदी माना गया है

गंगा नदी अपवाह तंत्र : गंगा भारत की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पवित्र नदियों में से एक है। इसे अलकनंदा या घुघुनी या घुनदी भी कहा जाता है। जैसा कि ऋग्वेद और शतपथ ब्राह्यमण (ग्11.5.4.11) में वर्णित है।

गंगा नदी बर्फीले हिमालय क्षेत्र से निकलकर उत्तर काशी, हरिद्वार, बदायूँ, फतेहगढ़, मानपुर, इलाहाबाद, मिर्जापुर, वाराणसी, गाजीपुर होते हुए गहड़ा परगना के दक्षिण में कोरण्टाडीह तथा बक्सर (बिहार राज्य) के बीच बहती हुई बलिया जनपद की सीमा को स्पर्श करती है

गंगा की सहायक नदियों में घाघरा और उसकी सहायक कुआनों, राप्ती, गण्डक,

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

छोटी गण्डक, बूढ़ी गण्डक, कोशी, वरूणा, गोमती तथा उसकी सहायक सई एवं सोन उल्लेखनीय है। घाघरा सरयूपार घाटी की प्रमुख नदी है

छोटी सरयू (टोंस): गंगा की प्रमुख सहायिका छोटी सरयू (टोंस) है, जो मऊ जनपद से निकलकर सर्वप्रथम चाँदपुर के पास रसड़ा खण्ड में प्रवेश करती है और गाजीपुर जनपद से विभाजक रेखा का काम करती है ।

गोमती: डॉ. वी. सी. लाहा ने गोमती नदी को आधुनिक गूम्ती या गोम्ती से समीकृत किया है । महत्त्व की दृष्टि से इस नदी का घाघरा नदी के बाद दूसरा स्थान है

तमसा : भारत की प्रमुख पौराणिक व वैदिक नदी 'तमसा' जो कालान्तर में अंग्रेजी उच्चारण के कारण टोंस कहलाती है । ऋक्ष पर्वत से निकलकर उत्तर–पूर्व में बहती हुई इलाहाबाद से आगे गंगा में मिलती है।

सरयू : सरयू उत्तर भारत की पंच महानदों अथवा महानदियों में से एक है। सरयू बिहार के छपरा जिले में गंगा से मिलती है। यह ऐतिहासिक नदी अब घर्घरा (घाघरा) नाम से विश्रुत है। बहराइच जिले होकर बहती हुई कुछ महत्त्वहीन सहायक नदियाँ गोण्डा जिले में घाघरा में मिलती हैं ।

गण्डक नदी : यह नदी भी गंगा की प्रमुख नदियों में एक है। यह अपनी सात सहायक नदियों के साथ मध्य हिमालय में नेपाल की उत्तरी सीमा तथा तिब्बत में विस्तृत व विशाल हिमालय अन्नपूर्णा पहाड़ियों के समीप मानग मोह एवं कुतांग के समीप से निकलती हैं।

बूढ़ी गण्डक : यह नदी सोमेश्वर श्रेणियों के पश्चिमी भाग से निकलकर बिहार के उत्तरी–पश्चिमी जिले पश्चिमी चम्पारण में प्रवेश करती है, तथा मुंगेर जिलें में प्रवाहित होती हुई गंगा में समा जाती है।

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

कोसी नदी : इस नदी का निर्माण वस्तुतः पूर्वी नेपाल में स्थित सप्त कौसिकी क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली सात जल धाराओं से बनने वाली तीन नदियों (ताबर, अरूण और सुतकोसी) के संगम से हुई है

सई नदी – गोमती की प्रमुख सहायक नदी है। यह हरदोई जिले की झील से निकल कर लखनऊ जिले को उन्नाव जनपद से विभाजित करती हुई रायबरेली, प्रतापगढ़ जिले से होती हुई जौनपुर, परगना गढ़वारा में प्रवेश करती है। यह राजेपुर के पास गोमती में मिलती है

घोघी – घोघी नदी नेपाल से जनपद बस्ती की उत्तर–पश्चिम सीमा बनाती हुई दक्षिण की ओर बढ़ती है और धानी बाजार से आगे राप्ती में मिल जाती है ।

तरैना – यह नदी बस्ती जिले के एक ताल से निकल कर पश्चिम से पूर्व की ओर प्रवाहित होती हुई राप्ती में मिल जाती है ।

बागमती : इस नदी का उद्‌गम स्थान नेपाल की राजधानी काठंमाडू नगर के पूर्वोत्तर कोण में हिमालय के गोसाईनाथ उच्च शिखर की दक्षिणी ढलान पर है । काठमांडू क्षेत्र की नदियों का पानी समेट कर मकवानपुर जिले से होती हुई रोतहट जिले में आती है।

लाल बकेया : इस नदी का एक नाम 'ताल बकेया' भी है। यह नेपाल स्थित हिमालय के दक्षिणी भाग पर्वत–श्रृंखता के पाद–मूल से प्रवाहित होती है । यह नदी तराई होते हुए बरैगनिया रेलवे स्टेशन से लगभग डेढ़ किलोमीटर पश्चिम में भारत में प्रवेश करती है।

कोला नदी : यह बड़ी बागमती नदी की ही एक प्राचीन उपधारा है, जिससे होकर किसी काल में बागमती बहती थी। मेजरगंज के दक्षिण में 'ससौला' ग्राम के पास से

e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

यह उपधारा फूटती है। कोला नदी बड़ी बागमती का पानी निकालने वाला एक संकीर्ण गलियारा है। इसी से इसका नाम 'कोला' नदी है

निष्कर्ष

उपरोक्त संयोजित परिकल्पना के आधार पर संक्षेप में कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र (मध्य गंगा घाटी) एक सुपरिभाषित भौगोलिक इकाई नहीं है किन्तु इसमें आश्चर्यजनक भौतिक एवं सांस्कृतिक विविधताएं परिलक्षित होती हैं। फिर भी अद्वितीय विविधताओं के बीच यहाँ एक अनुपम सांस्कृतिक एकता भी दृष्टिगोचर होती है। इन विविधताओं के बावजूद इस क्षेत्र में एक मौलिक एकता का सूत्र विद्यमान है जो सम्पूर्ण देश को एक महान राष्ट्र के रूप में बाँधता हैं। यहाँ के लोग अर्थात् जन–मन विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना करते हैं किन्तु वेद, पुराण, ब्राह्मण ग्रंथ, महाकाव्य आदि धर्म ग्रंथ विविधता तथा भिन्नता पूर्ण वर्गो को एक धार्मिक समाज के रूप में बाँटते हैं। सभी हिन्दू, कर्म, धर्म, पुर्नजन्म, आत्मा की अमरता, त्याग तथा मोक्ष के सिद्धान्तों में गहरी और अटूट आस्था भी रखते हैं।

उपर्युक्त अध्ययन क्षेत्र की आवश्यकताओं में बाढ़–नियंत्रण, मिट्टी के अपरदन की रोकथाम और उद्योग–धन्धों का विकास मुख्य है। इस कड़ी में उल्लेखनीय है कि चूँकि उपर्युक्त सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या का घनत्व अधिक होने के बावजूद शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सिंचन, परिवहन एवं संचार की प्रथम व्यवस्था होने के कारण सांस्कृतिक विकास की असीमित/पर्याप्त सम्भावनाएं हैं

वस्तुतः यह वह पावन भूमि है जहाँ गंगा देश भर की नदियों का पवित्र पर्याय आज भी बनी हुई है, और यह राम, कृष्ण, बुद्ध व महावीर की कर्मभूमि है। अनेक विचारों ने मानव इतिहास को समृद्ध किया है। स्पष्टतः महिमा 'सप्त सिंधु' के बाद का

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

इतिहास इसी उत्तर प्रदेश में रूपायित हुआ। इसी कड़ी में उल्लेखनीय है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश विष्णु, शिव और देवी दुर्गा की लीला भूमि है। यहाँ की कोमल ऊपजाऊ मिट्टी में प्राग–ऐतिहासिक ध्वंसावशेष दबकर नष्ट हो गए और खोदने वाले को शिव, विष्णु की कथा के प्रमाण नहीं मिले पर निश्चय ही प्राचीन भारतीय सभ्यता का जन्म इसी भागवत भूमि गंगा घाटी में हुआ।

सन्दर्भः–

- सिंह, आर.एल., 1971, इण्डिया, ए रीजनल ज्योग्राफी, ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ इण्डिया, वाराणसी, पृ. 183–184
- स्पेट, ओ. एच. के. एण्ड ए.एम. लीरमान्थ, 1960, इण्डिया एण्ड पाकिस्तान : ए जनरल एण्ड रीजनल जोग्रॉफी, लंदन, पृ. 564
- हनुमान जी, 2004, पूर्वी उत्तर प्रदेश की पात्र–परम्पराओं का अध्ययन (प्रारंभ से ऐतिहासिक काल तक), अप्रकाशित पी–एच.डी., शोध–प्रबन्ध, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, पृ. 6
- शर्मा, जी.आर., 1975, सीजनल माइग्रेशन्स एण्ड मेसोलिथिक लेक कल्चर्स ऑफ दि गंगा वैली, के. सी. चट्टोपाध्याय मेमोरियल, वाल्यूम, पृ. 5–6
- पाल, आभा, 2002, मध्य गांगेय मैदान में संस्कृतियों का उद्भव एवं विकास प्रक्रिया, डी. फिल. उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, पृ. 8–9
- मामोरिया, चतुर्भुज एवं जे. पी. मिश्रा, भारत का भूगोल, पूर्णतः संशोधित, सवंर्द्धित एवं परिमार्जित संस्करण, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 331
- सिंह, जगदीश, 2004, भारत, भौगोलिक आधार एवं आयाम, द्वितीय (संशोधित संस्करण),

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. 61

- एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, 1943 व 1977, वाल्यूम–7 (इडिट बाई विलियम वेन्दन), पृ. 879
- लाहा, वी. सी., 1972, प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, लखनऊ।
- अथर्ववेद (4/7/1) – वारिदं वाश्यांते वरणा वत्या मधिततताभृत स्यासिक्तं तेनाते वारये विषम।
- जपालोपनिषद (पेज–16) में आध्यात्मिक अर्थ के रूप में वरूणा शब्द का अभिप्राय स्पष्ट किया गया है। महाभारत, भीष्मपर्व (6/70/30)।
- पाणिनी के वरणादिम्यश्च सूत्र (4/2/82), वरणानाम दूर भवं नगरं वरणाः काशिका।
- बौद्ध ग्रंथ (महावस्तु भाग–3, पृ. 401–02), बुद्धचरित, सर्ग 15, श्लोक 78–20, सर्ग 21, श्लोक 25)।
- जैन ग्रंथ प्रज्ञापणा सूत्र एवं विविध कल्प।